3

कलीसिया के उद्देश्यों की प्राप्तकर्ताओं की गहरी समझ के लिए पौलुस की प्रार्थना

(1:15-23)

इफिसियों के यानी इफिसी भाइयों का विचार करते हुए पौलुस ने उनकी ओर से प्रार्थनाएं की। 1:15-23 में हम देखते हैं कि मसीह की देह अर्थात तेजस्वी कलीसिया के इन लोगों के लिए पौलुस ने परमेश्वर से क्या मांगा।

परिचय (1:15-18)

[15]इस कारण, मैं भी उस विश्वास का समाचार सुनकर जो तुम लोगों में प्रभु यीशु पर है और तुम्हारा प्रेम जो सब पवित्र लोगों से है। [16]तुम्हारे लिए धन्यवाद करना नहीं छोड़ता, और अपनी प्रार्थनाओं में तुम्हें स्मरण किया करता हूं। [17]कि हमारे प्रभु यीशु मसीह का परमेश्वर जो महिमा का पिता है, तुम्हें अपनी पहचान में, ज्ञान और प्रकाश की आत्मा दे। [18]और तुम्हारे मन की आंखें ज्योतिर्मय हों।

आयतें 15, 16. इस कारण जो *dia touto* का अनुवाद है, इसका अर्थ है ''एक कारण''[1] और इसका इस्तेमाल या तो अभी-अभी जो कुछ उसने आयत 3 से 14 में कहा उसके लिए या केवल छाप और ब्याना के बारे में 13 और 14 आयतों में जो कुछ कहा। दोनों ही बातों में पौलुस जिसने ''उस विश्वास का समाचार'' और उनका ''प्रेम'' जो सब ''पवित्र लोगों से'' था के लिए परमेश्वर का धन्यवाद दे रहा था और प्रार्थना में उन्हें ''स्मरण'' कर रहा था। NASB में इन वाक्यांशों का अनुवाद यह अर्थ देने के लिए किया गया है कि इन भाइयों का यीशु में सराहनीय विश्वास था, जो उनके विश्वास की *बात* थी। उस दायरे के रूप में, जिसमें उन्होंने बपतिस्मा लिया था और जिसमें वे रह रहे थे और हर प्रकार की आत्मिक आशीष का आनन्द ले रहे थे **प्रभु यीशु** को पहचानने का वैकल्पिक विचार होगा। यीशु को यहां पर अपने विश्वास की बात के रूप में दिखाने को प्राथमिकता दी गई, क्योंकि इसके बाद पौलुस ने **तुम्हारा प्रेम जो सब पवित्र लोगों से** कहा जिसका अर्थ यह निकाला जाता है कि पवित्र लोग उनके प्रेम से बाधित थे।

इफिसियों में पाया जाने वाला यीशु में **विश्वास** जिसे *tēn kath humas pistin* के रूप में दिखाया गया है, का मूल अर्थ ''the down among you faith'' या ''नीचे तुम्हारे विश्वास के साथ''[2] पौलुस उनके दैनिक जीवन के लिए प्रभु में प्रतिदिन के विश्वास'' की

सराहना कर रहा था।[3] इस विश्वास में ''सब पवित्र लोगों से प्रेम'' दिखाया और अन्य सब मसीही लोगों के साथ इफिसियों की एकता को दिखाया। अपने भाइयों के लिए ऐसा प्रेम सराहनीय है, क्योंकि यीशु ने एक-दूसरे के लिए प्रेम बताया, जिससे लोग जान सकते हैं कि उसके चेले कौन हैं (यूहन्ना 13:34, 35)। यहां इकट्ठे दिए गए ''विश्वास'' और ''प्रेम'' 1 थिस्सलुनीकियों 1:3 और कुलुस्सियों 1:4, 5 में भी मिलते हैं। प्राचीन दस्तावेज़ों में आम तौर पर ''विश्वास'' और ''प्रेम'' को ''आशा'' के साथ दिखाया जाता है। 1 थिस्सलुनीकियों 1:3 और कुलुस्सियों 1:4, 5 में पौलुस ने इन तीनों शब्दों का इस्तेमाल किया है। इफिसियों 1 में उसने आयतें 12 और 18 में ''आशा'' की बात की और आयत 15 में ''विश्वास'' और ''प्रेम'' जोड़ दिया।

ऐसे शब्दों को सुनकर **सुनकर** कुछ व्याख्याकर्त्ताओं ने यह संकेत लिया है कि लेखक को इफिसुस की कलीसिया की व्यक्तिगत जानकारी नहीं थी इस कारण लेखक पौलुस को छोड़ कोई और रहा होगा। परन्तु 2 कुरिन्थियों पर ध्यान दिया जाना चाहिए। पहला, पौलुस निजी तौर पर फिलेमोन को जानता था और उसने उसे ''हमारे प्रिय सहकर्मी फिलेमोन'' कहा (फिलेमोन 1)। ''प्रिय सहकर्मी'' वही शब्द है जिसका इस्तेमाल पौलुस ने फिलेमोन की पत्री के अन्त में मरकुस, अरिस्तरखुस, देमास और लूका के लिए किया (आयत 24)। हम जानते हैं कि ये लोग वास्तव में पौलुस के साथ काम करते थे। फिलेमोन ने व्यक्तिगत रूप में पौलुस के साथ काम किया होगा। दूसरा, फिलेमोन को बेशक पौलुस ने ही विश्वास में लाया था, क्योंकि पौलुस ने कहा कि फिलेमोन का कर्ज वह ''आप'' भर देगा (आयत 19)। इसके बावजूद पौलुस ने कहा कि उसने फिलेमोन के प्रेम और विश्वास के बारे में *सुना* था (आयत 5)। पौलुस के उसके विश्वास और प्रेम को सुनने का अर्थ यह नहीं है कि वह व्यक्तिगत रूप से फिलेमोन को नहीं जानता था। इसका अर्थ यह है कि पौलुस ने फिलेमोन को पिछली बार देखने के बाद से उसके बढ़ने और विश्वास में बने रहने के बारे में सुना था। इसलिए जब पौलुस ने कहा कि उसने इफिसियों के विश्वास और प्रेम के विषय में सुना है तो उसके कहने का अर्थ केवल इतना था कि उसे मसीही जीवन में चलने में उनके लगातार विकास पर ध्यान था।

पौलुस ने अपने भाइयों को यह भी बताया कि वह उनके लिए **धन्यवाद करना नहीं छोड़ता**। पौलुस ने अपनी प्रार्थनाओं में शामिल करने के लिए लोगों की एक लम्बी सूची बनाई होती थी। ''धन्यवाद करना'' यूनानी क्रिया शब्द *eucharisteō* का अनुवाद जिसका मूल अर्थ है ''अच्छा अनुग्रह।''[4] पौलुस अपने पत्रों के पाने वालों के बारे में जो कुछ जानता था उसके लिए लगातार परमेश्वर को धन्यवाद देता था। वह उनके विश्वास और प्रेम के लिए और जो कुछ उनके द्वारा परमेश्वर कर रहा था, उसके लिए धन्यवादित था।

आयतें 16, 17. धन्यवाद करने के अलावा पौलुस ने कहा कि वह इफिसियों को अपनी **प्रार्थनाओं** में याद करता है। ''प्रार्थनाओं'' यूनानी संज्ञा शब्द *proseuchē* का अनुवाद है। जिसे आम तौर पर नये नियम में ''प्रार्थना'' के लिए इस्तेमाल किया गया है। अगली आयत में हम उन विनतियों को देखते हैं, जो उसने परमेश्वर के सामने कीं।

पौलुस का **हमारे प्रभु यीशु मसीह** के **परमेश्वर** और ''पिता'' का हवाला आयत 3 का स्मरण दिलाता है। एस. डी. एफ़. सैल्मण्ड ने लिखा है:

अनादि परमेश्वरत्व में पुत्र के पास पिता की ओर से जो ईश्वर का स्रोत है, जीवन मिला है और उस अर्थ में जिसमें *पुत्र पिता* के अधीन होता है जिसके उसमें वही ईश्वरीय अस्तित्व है, अधीन है। हमारे प्रभु की छुटकारे की सेवकाई में, चाहे अनादि पिता का पुत्र, परमेश्वर का मसीह है, परन्तु उसे *भेजकर* [गलातियों 4:4], उसे *ऊंचा करके* [फिलिप्पियों 2:9], उससे राज्य को वापस *पाकर* [1 कुरिन्थियों 15:24]। परमेश्वर उसमें प्रकट किया जा रहा है। उसके मिशन, उसके मनन, उसके आधिकारिक कार्य और सम्बन्धों के सम्बन्ध में, *अपने* परमेश्वर के रूप में उसके पास परमेश्वर है, जिसकी आज्ञा उसने उठाई है और जिसकी छुड़ाने की मंशा को उसे पूरा करना है।[5]

पिता की महिमा के स्रोत के रूप में परमेश्वर या महिमा देने वाले के रूप में परमेश्वर के लिए हो सकता है। इन शब्दों का अर्थ ''पिता जिसकी महिमा है'' के अर्थ के रूप में देखना बेहतर हो सकता है। कैनथ एस. वुएस्ट के अनुसार ''महिमा'' से पहले निश्चित उप-पद ''*the* glory'' का अर्थ ''महिमा'' इस अर्थ में है कि वह पिता है जिसकी महिमा है।''[6] एंड्रियू टी. लिंकोन ने ध्यान दिया कि ''महिमा'' में ''ईश्वरीय स्थिति और सामर्थ की शान''[7] और आगे कहा कि पौलुस के लेखों में ''महिमा'' और ''सामर्थ'' परमेश्वर की गतिविधि के अर्थ में समानार्थी शब्द हो सकते हैं। यह विचार परमेश्वर के होने की चमक अर्थात उसके ईश्वरीय स्वभाव को इफिसियों के मनों को चमकाने के लिए जोड़ी गई होगी, जो कि उन आशिषों में से एक है, जिसके लिए पौलुस ने प्रार्थना की (1:18)।

पौलुस ने चाहा कि इफिसियों को परमेश्वर की ओर से **अपनी पहचान में, ज्ञान और प्रकाश की आत्मा** मिले ताकि उनमें उसकी तीन विशेष प्रार्थनाएं (देखें 1:18, 19) पूरी हों। कुछ व्याख्याकर्त्ताओं का विचार है कि ''आत्मा'' ''पवित्र आत्मा'' होना चाहिए। परन्तु वचन में ''आत्मा'' से पहले कोई उपपद नहीं है और संदर्भ परमेश्वरत्व में अन्य पुरुष का हवाला नहीं देता। पौलुस ने चाहा कि भाइयों को ''ज्ञान और प्रकाश के आत्मा'' मिले न कि वह ज्ञान और प्रकाश जिसे आत्मा देता है। तौभी उनके जीवनों में आत्मा का काम था और आत्मा ने मनुष्यों को प्रेरणा देकर सुसमाचार का प्रकाश किया था (1 कुरिन्थियों 2:13)।

कुलुस्सियों 1:9-11 में इसके साथ मेल खाता हवाला हमें इफिसियों के इस भाग को समझाने में सहायता करता है। पौलुस ने प्रार्थना की कि कुलुस्से के लोग ''सारे आत्मिक ज्ञान और समझ सहित परमेश्वर की इच्छा की पहचान में परिपूर्ण हो'' जाएं। वह चाहता था कि कुलुस्सियों को आत्मिक समझ मिले, जिससे वे अपने जीवनों के लिए परमेश्वर की इच्छा को लागू करने लिए समझ और बुद्धि पाएं। अपेक्षित अंतिम परिणाम यह था कि परमेश्वर का उनका ज्ञान बढ़े या वह परमेश्वर को पूरी तरह से जान लें।

''ज्ञान'' (1:17; कुलुस्सियों 1:10) *epignōsis* से लिया गया है जिसका अर्थ ''विशाल और अधिक विस्तृत जानकारी'' है।[8] ''ज्ञान'' के लिए यूनानी संज्ञा शब्द *gnōsis* है। ज्ञान के विषय के साथ अधिक भागीदारी का संकेत देते हुए और वह ज्ञान जिसका जानने वाले पर ज़बर्दस्त प्रभाव है, पूर्वसर्ग *epi* जोड़ा गया है।[9]

हमें परमेश्वर का अधिक ज्ञान कैसे मिलता है? इस संदर्भ में परमेश्वर प्रार्थना के उत्तर में,

अपने प्रकट किए गए संदेश में सच्चाइयों को लोगों को समझने और सही तरह से लागू करने में सहायता के लिए ज्ञान देता है। जितना परमेश्वर के साथ हमारा सम्बन्ध निकट होगा, उतना ही हम उसे बेहतर ढंग से जान पाएंगे। उत्तर मिली प्रार्थना और परमेश्वर के उपाय का अनुभव करते हुए हम समय के साथ आत्मिक रूप में बढ़ते हैं। इस आयत में पौलुस का उद्देश्य इफिसियों को और प्रकाशन दिलाना नहीं बल्कि यह था कि उन्हें उस प्रकाशन को समझने और लागू करने की समझ मिल जाए, जो परमेश्वर के पूर्ण ज्ञान तक पहुंचने के लिए उनके पास पहले से था। परमेश्वर के इस ज्ञान के साथ उन्हें वह तीन बातें मिल सकती थी, जिनके लिए आयतें 18 और 19 में पौलुस ने प्रार्थना की।

आयत 18. ''मन'' मनुष्य की समझ, भावना और इच्छा शक्ति का स्थान है। इस बात को ध्यान में रखते हुए हम समझ सकते हैं कि बाइबल मनुष्य के अपने मन में सोचने (नीतिवचन 23:7; KJV; मत्ती 9:4), अपने मन से प्रेम करने (मत्ती 22:37) और मन से आज्ञा मानने (रोमियों 6:17) की बात क्यों करती है। पौलुस ने **तुम्हारे मन की आंखें** कहा, जिससे उसका अभिप्राय मानवीय, भावना और वह इच्छा का स्थान था जो प्राप्त की गई जानकारी पर विचार कर सकती है, तर्क दे सकती है, समझ सकती है, निर्णय दे सकती है और काम कर सकती है। जब कोई परमेश्वर के संदेश को सुनता है तो वह उसे स्वीकार या नकार सकता है। यदि वह इसे समझ के साथ स्वीकार करता है तो हम कह सकते हैं कि उसकी आंखें खुली हुई हैं (लूका 24:31)। यदि वह इसे नासमझी, पूर्वधारणा या पक्षपात के कारण नकार देता है तो हम कह सकते हैं कि उसकी आंखें बंद हैं या अंधी हैं (मत्ती 13:15, 16)। इस अर्थ में मन की आंखें हैं। पौलुस ने इफिसियों के लिए प्रार्थना की कि ''तुम्हारे मन की आंखें ज्योतिर्मय हों।''

ज्योतिर्मय हों इफिसियों के लिए वर्तमान के परिणामों के साथ कालांतर में हुई किसी बात को कहा गया है: ''तुम्हारे मन की आंखें ज्योतिर्मय हो गई हैं, उस वर्तमान परिणाम के साथ कि अब तुम चमक गए हो।'' यह ज्योति तब मिली थी, जब उन्होंने सुसमाचार को सुना और सुनाना था। अब वे ज्योति पाए हुए थे। इसलिए चमक या समझ में बढ़ने के लिए पौलुस की प्रार्थना थी जो उन्हें पहले ही मिल गई थी। ''ज्योतिर्मय'' उसके उलट है जो विश्वास में आने से पहले इफिसी थे। ''उनकी बुद्धि अन्धेरी'' थी (4:18) और ''पहले अंधकार के''; परन्तु पवित्र लोग और मसीह में विश्वासी बनने के बाद वे ''प्रभु में ज्योति'' थे और ''ज्योति की सन्तान के समान'' चलना आवश्यक था (5:8)।

इफिसी लोग उन लोगों में से थे जिनकी आंखें खुल गई थीं और जो अंधकार में से ज्योति में बदल गए थे। वे शैतान के प्रभुत्व में से परमेश्वर के प्रभुत्व में चले गए थे। ताकि वे पापों की क्षमा और उन लोगों के साथ मीरास पा सकें, जिन्हें मसीह में विश्वास के द्वारा पवित्र किया गया है (देखें प्रेरितों 26:18)। उन्हें इस समझ में जो उन्हें मिली थी बढ़ना आवश्यक था।

परमेश्वर की बुलाहट, उसकी मीरास और उसकी सामर्थ की महानता (1:18,19)

[18]...तुम जान लो कि उसके बुलाने से कैसी आशा होती है, और पवित्र लोगों में उसकी

मीरास की महिमा का धन कैसा है। [19]और उसकी सामर्थ हमारी ओर जो विश्वास करते हैं, कितनी महान है, उस की शक्ति के प्रभाव के उस कार्य के अनुसार।

इफीसी लोग अपने विश्वास में बढ़ रहे और मज़बूत हो रहे थे, तभी पौलुस ने उनके लिए प्रार्थना की कि वे परमेश्वर की मंशा की गहरी समझ तक पहुंच जाएं जो उन में काम कर रही थी। वह चाहता था कि वे तीन बातों में जागृत हो जाएं और साफ़-साफ़ देख सकें। उसने प्रार्थना की कि वे परमेश्वर की बुलाहट, उनकी मीरास की महिमा के धन और परमेश्वर की सामर्थ की महानता को पूरी तरह से जान जाएं।

आयत 18. पहले तो पौलुस अपने पाठकों को उस आशा को गहराई से समझाना चाहता था जो परमेश्वर की बुलाहट के कारण उनकी थी। उसने कहा कि वह उनके जागृत होने के लिए प्रार्थना करता है ताकि ''**तुम जान लो कि उसके बुलाने से कैसी आशा होती है।**'' **उसके बुलाने** का उल्लेख पत्र के आरम्भ में ले जाता है, जहां पौलुस ने इस तथ्य की बात की कि परमेश्वर ने ''हमें चुन लिया'' है (1:4)। यह ''जिस बुलाहट से तुम बुलाए गए थे'' (4:1) और ''अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है'' (4:4) की ओर आगे को भी देखता है जिसकी बात पौलुस ने पत्री में आगे की। परमेश्वर की बुलाहट मनमानी नहीं है, क्योंकि परमेश्वर उद्धार के लिए लोगों के स्वीकार किए जाने या ठुकराए जाने के सम्बन्ध में पसन्द नहीं बना रहा है, इस कारण यह हमारे लिए उसके साथ सम्बन्ध रखने के लिए रास्ता खोलने की उसकी पहल की बात करता है। हमारी आशा ''मसीह में'' है और हमारी यह आशा इस कारण है, क्योंकि परमेश्वर ने इसे ''उसकी महिमा की स्तुति के कारण'' दिया है (1:12)।

इफिसियों की पापपूर्ण स्थिति के विपरीत पौलुस के लिखने के समय उन्हें अपनी पूरी मीरास की आशा थी (1:11-14)। उनकी आशा स्वर्ग के लिए (कुलुस्सियों 1:5) अर्थात ऐसी प्रतिज्ञा थी जो सुसमाचार को उनके ग्रहण करने से मिली थी (कुलुस्सियों 1:23)। **आशा** (*elpis*) ''इसे पाने की उम्मीद से किसी अच्छी चीज़ की इच्छा'' है। इन मसीही लोगों को न केवल स्वर्ग की इच्छा थी, बल्कि उन्हें परमेश्वर की प्रतिज्ञा के कारण वहां रहने की उम्मीद भी थी। आशा केवल इच्छा नहीं है: कोई बाइबल के दृष्टिकोण को वहां जाए बिना किसी उम्मीद के स्वर्ग की इच्छा रख सकता है। न ही आशा केवल उम्मीद है। कोई किसी भयंकर चीज़ के होने की इच्छा किए बिना इसके होने की उम्मीद कर सकता है। आशा इच्छा और उम्मीद दोनों हैं। परमेश्वर के वचन पर आधारित यह आशा ''प्राण के लिए ऐसा लंगर है जो स्थिर और दृढ़ है'' जब मसीही व्यक्ति इस जीवन में समस्याओं का सामना करता है (इब्रानियों 6:19)। पौलुस चाहता था कि उसके पाठक ''उसकी बुलाहट की आशा'' में बढ़े।

आयत 18. दूसरा, पौलुस ने प्रार्थना की कि इफिसी लोग जान लें कि ''पवित्र लोगों में उसकी मीरास की महिमा का धन कैसा है'' (1:18)। अध्याय 1 में पौलुस ने पहले ही ''मीरास'' का इस्तेमाल दो तरह से किया है। पवित्र लोग परमेश्वर की मीरास से (देखें 1:11) और पवित्र आत्मा जो मसीही लोगों को दान के रूप में मिलने वाला है, ''हमारी मीरास का ब्याना'' है (1:14)। यदि **पवित्र लोगों में** परमेश्वर की **मीरास** की बात करते हुए पौलुस के मन में पहले वाली बात थी, तो वह उन्हें बताना चाहता था कि परमेश्वर की दृष्टि में वे कितने

कीमती हैं। यदि पौलुस ने ''मीरास'' का इस्तेमाल बाद के अर्थ में किया तो वह चाहता था कि वे **महिमा** के धन को जो परमेश्वर ने उनके लिए अगले संसार में रखा है दो तरह से समझ रहा था। आयत 14 में पौलुस की बात के आधार पर लगता है कि परमेश्वर के पवित्र लोगों को मिलने वाली तेजोमय मीरास की बड़ी समझ मिलने के लिए प्रार्थना करते समय उसके मन में बाद वाली बात थी।

आयत 19. पौलुस इफिसियों को यह भी बताने को आतुर था कि ''उसकी सामर्थ हमारी ओर जो विश्वास करते हैं, कितनी महान है।'' इन मसीही लोगों के लिए पौलुस की प्रार्थना में यह तीसरी विनती है। यह सामर्थ भरे शब्दों से लबालब है। पौलुस ने प्रार्थना की कि उसके पाठकों को परमेश्वर की **सामर्थ** की बड़ी समझ आ सके।

इस पत्र में इस सामर्थ के लिए प्रेरित ने चार शब्दों का इस्तेमाल किया। उसने ''सामर्थ'' शब्दों का परिचय परमेश्वर की **श्रेष्ठ महानता** *(huperballon megethos)* का हवाला देते हुए दिया। इसमें ''के आगे फैंकना ... उत्तमता'' शामिल है अर्थात महानता की एक श्रेष्ठ किस्म जो माप से बढ़कर, अर्थात केवल महानता और शक्ति से कहीं बढ़कर है।[11] परमेश्वर की सामर्थ बिना सीमाओं के है। यहां पर इस्तेमाल हुए ''सामर्थ'' के चार शब्द हैं। *dunamis* जो ''स्वाभाविक योग्यता, सहज सामर्थ'' के लिए यूनानी शब्द है; *energeia,* जिसका अनुवाद **कार्य** हुआ है और इसका अर्थ, ''ऊर्जा, कार्य में शक्ति''; *ischus,* जिसका अनुवाद **प्रभाव** हुआ है और यह ''शारीरिक शक्ति के साथ देना'' का संकेत देता है; *kratos,* शक्ति अनुवाद हुआ क्रिया शब्द है जिसका अर्थ ''प्रभाव में शक्ति'' है।[12] इन चारों अवधारणाओं का इकट्ठा करने पर पौलुस ने परमेश्वर के सहज सामर्थ के साथ देने की बात, जिसके द्वारा वह अमापनीय प्रभावों को लाने के लिए काम करता है। पौलुस ने परमेश्वर की सामर्थ को इफिसियों की आशा और मीरास के साथ जोड़ दिया, जिस कारण उसके कहने का अर्थ यह होगा कि ऐसी कोई बात नहीं है कि परमेश्वर उनकी आशा को निराश करे या उन्हें मीरास देने में नाकाम हो। परमेश्वर इतना सामर्थी है कि जो कुछ उसने वचन दिया है वह उसे पूरा कर सकता है!

परमेश्वर की अद्‌भुत सामर्थ **हमारी ओर** है **जो विश्वास करते हैं**। ''ओर'' यूनानी उपसर्ग *eis* का अनुवाद है जो दिखाता है कि परमेश्वर की सामर्थ उन पर प्रकट है जो विश्वास करना जारी रखते हैं, उनकी आशा और मीरास का भरोसा दिलाते हुए। ''विश्वास'' निरन्तर कार्य करने की क्रिया है।

पौलुस ने इन तीन क्षेत्रों में बात पूरी की जिनमें वह अपने भाइयों को जागृत करना चाहता था।

परमेश्वर की सामर्थ दिखाई गई (1:20-23)

[20]जो उसने मसीह के विषय में किया, कि उस को मरे हुओं में से जिलाकर स्वर्गीय स्थानों में अपनी दहिनी ओर। [21]सब प्रकार की प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ और प्रभुता के, और हर एक नाम के ऊपर, जो न केवल इस लोक में, पर आने वाले लोक में भी लिया

जाएगा, [22]और सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया: और उसे सब वस्तुओं पर शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया। [23]यह उसकी देह है, और उसी की परिपूर्णता है, जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है।

पौलुस की प्रार्थना आयतों 20 से 23 में जारी रहती है। इफिसियों के लिए उसका प्रेम प्रकट है और परमेश्वर में उसका विश्वास उनके लिए उसकी याचनाओं में से झलकता है।

आयत 20. परमेश्वर की वह सामर्थ जिसे पौलुस चाहता था कि यह भाई पूरी तरह से समझ जाएं मसीह के पुनरुत्थान में दिखाई गई थीं।

हमारे वचन पाठ में उस सामर्थी काम की बात है **जो उस** [परमेश्वर] **ने मसीह के विषय में किया, कि उस को मरे हुओं में से जिला** दिया। **किया** का अनुवाद यूनानी अनुवाद *energeō* से किया गया है जिसका अर्थ है ''सक्रिय होना।''[13] अनिश्चित भूतकाल कृदंत सक्रिय क्रिया का सांकेतिक कालांतर में हुई किसी बात को दिखाता है। अभिप्राय यह है कि परमेश्वर कालांतर में शक्तिशाली ढंग से काम करता था और यह एक आश्वासन होना चाहिए कि वह अपने लोगों की आशाओं को पूरा करते हुए उनकी ओर से भविष्य में शक्तिशाली ढंग से काम करेगा। परमेश्वर की सामर्थ की बात करने के बाद जिसमें **मसीह में** काम किया, पौलुस ने उसकी बात की जिसे उस सामर्थ ने पूरा किया था: **उसने उसको मरे हुओं में से जिलाया**। मसीह का पुनरुत्थान यीशु के प्रभु होने का सबसे बड़ा सबूत था (देखें रोमियों 1:4)। उसका पुनरुत्थान परमेश्वर की सामर्थ की महानता का प्रदर्शन भी था। पौलुस ने इस वचन पाठ में क्रूस की बात नहीं की, क्योंकि क्रूस जितना महत्वपूर्ण है पुनरुत्थान की सामर्थ की तुलना में उसने इसे कमज़ोर पाया (2 कुरिन्थियों 13:4)। कुलुस्सियों 2:12 में प्रेरित ने यीशु के मरे हुओं में से जी उठने और विश्वासी के बपतिस्मे में से जी उठने के सम्बन्ध में *energeia* संज्ञा का इस्तेमाल किया। मुर्दों को जिलाने के लिए बड़ी सामर्थ की आवश्यकता है और यह बड़ी सामर्थ परमेश्वर की है।

आयत 20. पौलुस ने यह कहते हुए कि परमेश्वर ने न केवल मसीह को मुर्दों में से जिलाया बल्कि उसे ऊंचा भी किया **उसको मरे हुओं से जिलाकर स्वर्गीय स्थानों में अपनी दाहिनी ओर** बैठाया, उसकी सामर्थ पर ज़ोर दिया। ''बैठाया'' यह संकेत देता है कि छुटकारे का काम पूरा हो गया था परन्तु यह आदर, महिमा और शान के स्थान का भी संकेत देता है क्योंकि यह बिठाया जाना परमेश्वर के ''दाहिनी ओर'' है। पुराने नियम में परमेश्वर के दाहिने हाथ को समर्थन, विजय और शक्ति की स्थिति के रूप में दिखाया गया है (भजन संहिता 80:17; 20:6; 89:13)। वह सामर्थ, जिसने मसीह को महिमा दी इफिसी लोगों के पास उनकी आशा को पूरा करने और उनकी मीरास में उन्हें लाने के लिए थी। (''स्वर्गीय स्थानों'' के लिए 1:3 पर टिप्पणियां देखें।)

आयत 21. पौलुस ने ज़ोर दिया कि मसीह को ऊंचा किया जाना परमेश्वर की महान सामर्थ से सम्भव हुआ था। उसने मसीह के **सब प्रकार की प्रधानता** (*archē*)**, और अधिकार** (*exousia*)**, और सामर्थ** (*dunamis*) **और प्रभुता** (*kuriotēs*) **के ऊपर** होने की घोषणा की। पौलुस ने इन यूनानी शब्दों के पहले दो शब्दों का इस्तेमाल 3:10 और 6:12 में भी किया था। इन वचनों के अनुसार कलीसिया परमेश्वर की बुद्धि को ''प्रधानों'' और

''अधिकारों'' पर प्रकट करती है और मसीही व्यक्ति की लड़ाई ''प्रधानों'' और ''अधिकारों'' से है (''शक्तियों''; KJV) यही दोनों यूनानी शब्द कुलुस्सियों 2:10 और 2:15 में भी मिलते हैं। वहां मसीह को ''प्रधानताओं'' और ''अधिकारों'' को अपने ऊपर से उतारकर सारी ''प्रधानता'' और ''अधिकार'' पर शिरोमणि बताया गया है। रोमियों 8:38, 39 के अनुसार न तो प्रधानताएं *archē* और न ही कोई और बात हमें परमेश्वर के प्रेम से अलग कर सकती है। कुरिन्थियों के नाम लिखते हुए पौलुस ने अंत की बात की है, जब मसीह राज्य को परमेश्वर के हाथ में देकर ''सारी प्रधानता और सारा अधिकार और सामर्थ'' का अन्त कर देगा (1 कुरिन्थियों 15:24)। कुलुस्सियों 1:16 में ''प्रधानताएं'' और ''अधिकार'' ''उसी के द्वारा और उसी के लिए सृजी गई'' बताई गई हैं।

2 पतरस 2:10, 11 में ''शक्ति'' (*kuriotēs*) और ''सामर्थ'' (*dunamis*) का उल्लेख है। कुलुस्सियों 1:16 में ''प्रभुताएं'' (*kuriotēs*), ''प्रधानताएं'' (*archē*) और ''अधिकार'' (*exousia*) की बात की गई है। विचाराधीन वचन पाठ पर ''प्रधान,'' ''अधिकार,'' ''सामर्थ,'' और ''प्रभुता'' के विभिन्न उपयोगों का क्या अर्थ है? यह स्पष्ट लगता है कि पवित्र शास्त्र में अच्छे और बुरे, सांसारिक और स्वर्गीय कई अर्थों में इन शब्दों का उपयोग है। प्रेरित यह कहने की कोशिश कर रहा था कि मसीह स्वर्ग की हो या पृथ्वी की, आत्मिक संसार की हो या शारीरिक संसार की, हर बात और हर व्यक्ति से ऊपर है। एकमात्र अपवाद परमेश्वर है (1 कुरिन्थियों 15:27)।

आयत 21. हर एक नाम ... जो ... लिया जाएगा वाक्यांश फिलिप्पियों 2:9, 10 पर ध्यान दिलाता है: ''इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया, और उसको वह नाम दिया, जो सब नामों में श्रेष्ठ है, ... कि ... सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें।'' इस आयत में जो नाम सबके ऊपर है वह ''यीशु'' हो सकता है, जिसका अर्थ है ''यहोवा उद्धारकर्त्ता।''[14] इस नाम का महत्व मत्ती 1:21 में दिखाई देता है जहां स्वर्गदूत ने यूसुफ से कहा, ''तू उसका नाम यीशु रखना, क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा।'' यशायाह 9:6 में मसीहा की भविष्यवाणी करने वाले नबी ने कहा, ''उसका नाम अद्भुत युक्ति करने वाला, पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शांति का राजकुमार रखा जाएगा।'' इब्रानियों 1:4, 5 यीशु को स्वर्गदूतों से उत्तम दिखाता है: ''... जितना उसने उन से बड़े पद का वारिस होकर उत्तम नाम पाया। क्योंकि स्वर्गदूतों में उसने कब किसी से कहा, 'तू मेरा पुत्र है, आज तू मुझ से उत्पन्न हुआ'? और फिर यह 'मैं उसका पिता हूंगा, और वह मेरा पुत्र होगा'?'' इसलिए चाहे हम ''यीशु'' नाम की बात को या फिर नबी द्वारा दिए नामों की या ''पुत्र'' की, जो नाम परमेश्वर ने उसे दिया है वह ''हर एक नाम के ऊपर'' है। मसीह हर स्थान में हर बात में श्रेष्ठ है और उसका नाम हर नाम से जो लिया जा सकता है, श्रेष्ठ है।

आयत 21. ये बातें **न केवल इस लोक में** पर आने वाले लोक में भी सत्य हैं। ''लोक'' के लिए यूनानी शब्द *kosmos* नहीं है जिसका अर्थ ''संसार'' (KJV) या सृजित संसार नहीं बल्कि *aiōn* है अन्तराल की बात करता है और उसका अर्थ वस्तुओं के भविष्य के साथ-साथ वर्तमान स्थिति भी है।[15] संज्ञा शब्द *aion* का इस्तेमाल ''इस लोक'' अर्थात वर्तमान के सम्बन्ध में और ''आने वाले लोक'' अर्थात भविष्य के सम्बन्ध में किया गया है जिसका आरम्भ मसीह के

द्वितीय आगमन पर होगा। मसीह वर्तमान युग में और आने वाले युग की हर बात में सबके ऊपर है। पौलुस ने मसीही व्यक्ति की मीरास (1:5, 18), आशा (1:18), अंतिम छुटकारे (1:14; 4:30), मसीह के अनन्त राज्य में स्थान (5:5), और परमेश्वर की महिमा (3:20, 21) की बात करते हुए बार-बार इसका संकेत दिया।

आयत 22. अपनी बड़ी सामर्थ के द्वारा परमेश्वर ने मसीह के अधिकार के नीचे हर बात को रखा: **और सब कुछ उसके पांवों तले कर दिया**। ''... तले कर दिया'' *hupotassō* का अनुवाद है जो सेना में इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द है, जिसका अर्थ टुकड़ियों को कमांडर के अधीन रखते हुए ''किसी के अधीन रखना''[16] होता है।

> इसलिए यह कार्य [*hupotassō* का अनिश्चित भूतकाल ... रूप] के द्वारा ऊंचा किए जाने के कारण पूर्ण अधिकार का पक्का दान हो सकता है। मसीह के जिलाए जाने के बाद सब बातों को उसके पांवों तले करने और उसे ... सब के ऊपर शिरोमणि बनाने के बाद परमेश्वर के दाहिने हाथ बिठाया गया।[17]

मुर्दों में से अपने जी उठने के बाद मसीह ने कहा, ''स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है'' (मत्ती 28:18)। वह सबका प्रभु है!

पत्र में पौलुस ने यहां पहली बार **कलीसिया** का उल्लेख किया। परन्तु पूरा पत्र कलीसिया पर ही है, और यहां इसका पहली बार उल्लेख परमेश्वर की मंशा में कलीसिया की ऊंची स्थिति को दर्शाता है। ''कलीसिया'' के लिए यूनानी संज्ञा शब्द (*ek,* में से) और (*kaleō,* ''बुलाना'') से बना एक मिश्रित शब्द *ekklēsia* है। यह लोगों के समूह को कहा जाता है जो ''इकट्ठा हुए'' हैं।[18] नये नियम में इसका इस्तेमाल इस्राएल की मण्डली (प्रेरितों 7:38) किसी भी बुलाई हुई सभा (प्रेरितों 19:32, 39, 41), परमेश्वर के लोगों की स्थानीय मण्डली (प्रेरितों 8:1; उदाहरण के लिए) किसी स्थान की कलीसियाओं (1 कुरिन्थियों 16:1; 2 कुरिन्थियों 8:1; गलातियों 1:2) और विश्वव्यापी कलीसिया या मसीह में सब उद्धार पाने वालों (मत्ती 16:18; कुलुस्सियों 1:18; इफिसियों 1:22) के लिए की गई है। कलीसिया परमेश्वर के बुलाए हुए लोग हैं (देखें 1 पतरस 2:9, 10), जिन्हें सुसमाचार के द्वारा बुलाया गया है (2 थिस्सलुनीकियों 2:14) और जिन्होंने इसे आज्ञापालन के द्वारा पाया है (प्रेरितों 2:37-47)।

पौलुस ने इफिसियों को पक्का किया कि परमेश्वर ने **उसे शिरोमणि ठहराकर कलीसिया को दे दिया**। जिस प्रकार से मसीह संसार की हर बात पर शिरोमणि है वैसे ही उसे कलीसिया को इसके सिर के रूप में परमेश्वर का दान दिया गया है। ''शिरोमणि'' *kephalē* का इस्तेमाल ''किसी भी बात पर *शिरोमणि, प्रमुख, प्रधान; ... स्वामी, प्रभु*'' के लिए किया गया है।[19] यहां पर मसीह के कलीसिया के शिरोमणि होने का अर्थ कलीसिया पर उसके अधिकार के लिए लिया जाए। कुलुस्सियों 2:10 में पौलुस ने शिरोमणि का इस्तेमाल इसी अर्थ में किया, जब उसने मसीह के लिए कहा, ''जो सारी प्रधानता और अधिकार का शिरोमणि है।'' कलीसिया दिशा और उद्देश्य के लिए मसीह और उसकी इच्छा की ओर देखती है। हमें मसीह के रूपांतर के समय परमेश्वर की अवश्य माननीय आज्ञा का स्मरण आता है ''यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं प्रसन्न हूं: *इस की सुनो*!'' (मत्ती 17:5)। मसीह की सुनने का अर्थ उसकी इच्छा के रूप में

नये नियम को मानना (देखें इब्रानियों 9:15-17), उसकी आज्ञा के रूप में नये नियम की बातों का सम्मान करना (1 कुरिन्थियों 14:37) और यह सुनिश्चित करना है कि हम ऐसे बोलें जैसा ''परमेश्वर का वचन'' है (1 पतरस 4:11)। कलीसिया के रूप में हमें उस सब के अधिकार के लिए जो कुछ हम करते हैं मसीह की ओर देखना आवश्यक है। चाहे यह आराधना की बात हो या संगठन की या फिर मिशन की।

मसीह कलीसिया का सिर है, इस कारण कलीसिया को उसकी आंखों में ऊंचा किया गया है जो संसार की सब बातों के ऊपर है, और वह इसे अपने सामने ''एक तेजस्वी कलीसिया'' के रूप में पेश करना चाहता है (5:27)। कलीसिया मसीह के लिए बहुमूल्य है, क्योंकि उसने ''अपने आपको उसके लिए दे दिया'' (5:25) और उसे बचाया (5:23)। हर मानवीय जीवन जिसे पाप से उद्धार देकर या बचाकर परमेश्वर के साथ मिला लिया गया है, वह कलीसिया का भाग है (2:16)। कोई भी जो कलीसिया के बारे में और मनुष्य के उद्धार में उसके महत्व पर अपमानजनक ढंग से बात करता है स्पष्टतया वह भूल गया है कि मसीह ने ''कलीसिया से प्रेम'' किया (5:25) और अपने लहू से उसे खरीदा है (प्रेरितों 20:28)। कलीसिया जिससे मसीह प्रेम करता है, को बड़ा दाम देकर खरीदा गया है। जिसे इसके लिए सिर के रूप में मसीह को आदर देना और ''मसीह के अधीन'' रहना आवश्यक है (इफिसियों 5:24)।

आयत 23. यह आयत कलीसिया को मसीह की **देह** के रूप में दिखाती है? यूनानी संज्ञा शब्द *sōma* जिसका अनुवाद ''देह'' किया गया है, का इस्तेमाल पौलुस द्वारा कलीसिया के सम्बन्ध में इस पत्र में कम से कम आठ बार हुआ है। इस आयत में पौलुस ने कहा कि कलीसिया मसीह की देह है। मसीह को देह के एक ''सिर'' के रूप में दिखाया गया है और कलीसिया को मसीह की ''एक देह'' के रूप में दिखाया गया है (देखें 4:4)।

इस रूपक के कई अर्थ हैं। 1 कुरिन्थियों 12:12-26 में कलीसिया की तुलना एक शारीरिक देह के साथ करते हुए पौलुस ने दिखाया कि शारीरिक देह का सिर के अधीन रहना और कलीसिया का मसीह के अधीन रहना आवश्यक है। जिस प्रकार से शारीरिक देह के कई अंग होते हैं वैसे ही कलीसिया के कई अंग या सदस्य हैं; परन्तु सिर केवल एक है और देह केवल एक ही है। इसी प्रकार से शारीरिक देह के अलग-अलग काम करने वाले कई अंग हैं, कलीसिया के परमेश्वर की ओर से अलग-अलग दान (या तोड़े) पाए हुए कई सदस्य हैं। शारीरिक देह के सभी अंग उनकी भूमिकाओं के बावजूद महत्वपूर्ण हैं; वैसे ही कलीसिया के सभी सदस्य महत्वपूर्ण हैं और उनकी आवश्यकता है। शारीरिक देह तभी अच्छी तरह काम करती है जब सिर के निर्देशन में हर अंग काम करे, वैसे ही कलीसिया सही ढंग से तभी काम करती है जब मसीह द्वारा दी गई दिशा के अनुसार हर सदस्य अपने-अपने तोड़ों को इस्तेमाल करता है। शारीरिक देह सिर के अधीन एक होती और कलीसिया को बिना फूट के मसीह के अधीन होना चाहिए। यदि शारीरिक देह के किसी अंग को दर्द होता है तो पूरी देह दुखी होती है। यही बात कलीसिया में भी लागू होती है। मसीह की देह के सदस्यों को दुख-दर्द और खुशी दूसरे सदस्यों के साथ बांटनी चाहिए।

कुछ समय के लिए इस संसार में मसीह के पास एक शारीरिक देह थी। अब चाहे उसकी शारीरिक देह नहीं है, परन्तु संसार में उसकी आत्मिक देह अर्थात कलीसिया है। मसीह की देह

के रूप में कलीसिया एक संगठन से बढ़कर है जिस पर मसीह का नियन्त्रण है। यह देह एक जीवित प्राणी है, जिसे जीवन इसके जीवित सिर से मिलता है, उसकी सामर्थ के द्वारा यह बनी रहती है और वह माध्यम है जिसके द्वारा वह काम करता है।

कलीसिया को ''उसी की परिपूर्णता, जो सब में सब कुछ पूर्ण करता है'' भी कहा गया है। जिस प्रकार कलीसिया मसीह की देह है वैसे ही इसे मसीह की परिपूर्णता के रूप में दिखाया गया है। व्याख्याकर्त्ता इस पर सहमत नहीं हैं कि **उसी की परिपूर्णता** का क्या अर्थ है। ''परिपूर्णता'' का अनुवाद *plēromā* यूनानी शब्द से किया गया है। जिसका अर्थ है, ''वह जिससे कोई भी चीज़ भरी है या जिससे यह भरा है''[20]; परन्तु यहां यह शब्द क्या दिखाता है उसे सही-सही बता पाना कठिन है। कुछ व्याख्याकर्त्ताओं का कहना है कि विचार यह है कि मसीह कलीसिया को परिपूर्ण करता है जो कि सही है; परन्तु इस आयत में ''देह'' और ''परिपूर्णता'' दोनों ही कलीसिया के लिए लगते हैं।

तो फिर कलीसिया किस अर्थ में मसीह की ''परिपूर्णता'' है ? पौलुस ने गलातियों 4:4 और कुलुस्सियों 1:19; 2:9 के साथ-साथ इफिसियों 1:10, 23; 3:19; 4:13 में इस शब्द का इस्तेमाल किया है। गलातियों 4:4 ''पूरा हुआ'' का अर्थ ''जब समय पूरा हुआ'' लगता है। इफिसियों 1:10 में यही अर्थ लगता है, जहां पौलुस ने ''समयों के पूरे होने'' की बात की। 3:19 में पौलुस ने मसीही लोगों के ''परमेश्वर की भरपूरी'' या जो कुछ परमेश्वर है उससे भरने की बात की। इफिसियों 4:13 कहता है कि अपनी परिपक्वता में कलीसिया का ''मसीह के पूरे डीलडौल'' में बढ़ना आवश्यक है। कुलुस्सियों 1:19 में हम देखते हैं कि परमेश्वरत्व की परिपूर्णता मसीह में वास करती है। इन सभी संदर्भों में ''परिपूर्णता'' का अर्थ गिलास के पानी से भरने, पूर्णता से भरे होने या इस प्रकार से भरने के अर्थ में है, जिसका किसी बात या किसी व्यक्ति का पूरक बनना है। इसलिए हम निष्कर्ष निकालते हैं कि गिलास के भरे होने की तरह कलीसिया मसीह की परिपूर्णता है। कलीसिया किसी प्रकार से मसीह की परिपूर्णता है, वैसे ही जैसे सिर तभी पूरा होता है जब इसके पास देह हो। मसीह संसार में कलीसिया को खरीदने के लिए आया। कलीसिया मसीह का पूरक है यानी वह उद्धारकर्त्ता है और कलीसिया उद्धार पाई हुई।

अपनी प्रार्थना के इस भाग का अंत पौलुस ने यह कहते हुए किया कि मसीह **सब में सब कुछ पूर्ण करता है**। मसीह संसार को पूर्ण करता है और वह कलीसिया को पूर्ण करता है। सर्वशक्तिमान प्रभु के रूप में परमेश्वर की ओर से मसीह को वह सब बनने की सामर्थ दी है जो वह है। पौलुस की प्रार्थना थी कि इफिसियों को ''अपने बुलाए जाने की आशा,'' ''उसकी मीरास की महिमा के धन'' और ''उसकी सामर्थ के समझ से बाहर होने'' की बात पूरी तरह से पता चल जाती है। परमेश्वर की यह बड़ी सामर्थ मसीह में तब लाई गई थी जब उसने उसे मुर्दों में से जिलाया, उसे अपने दाहिने हाथ ऊंचा किया और सब बातों पर शिरोमणि बनाकर कलीसिया को दे दिया।

प्रासंगिकता

अपनी स्थिति को जानना (1:15-23)

जब मेरा बेटा सॉकर खेलता था तो कोच का सबसे बड़ा काम हर खिलाड़ी को यह बताना होता था कि टीम में अपनी सही स्थिति पर रहे और खेले। खेलों के दौरान आम तौर पर वह खिलाड़ियों को स्थिति यानी पोज़िशन में रहने और किसी उलझन में पड़े छोटे लड़के से घबराए हुए लगने को कहता था। खिलाड़ी का अपनी स्थिति को जानना इस बात को तय करता है कि वह कितनी इच्छी तरह से खेल सकता है।

यही बात आत्मिक रूप में सही है। हमें परमेश्वर के सामने अपनी स्थिति का पता होना आवश्यक है। हमारा प्रतिदिन का व्यवहार मसीह में हमारी स्थिति की हमारी समझ से कभी अधिक नहीं होगा!

इफिसियों 1—3 में पौलुस ने मसीही व्यक्ति की स्थिति बताई। अध्याय 4 से 6 में उसने हमें हमारे व्यवहार के बारे में बताया, यानी यह कि हम अपनी स्थिति में प्रतिदिन कैसे कार्य करें। पौलुस ने कहा कि हमें मसीह में चुना गया, छुड़ाया गया और एक मीरास का आश्वासन दिया गया (1:1-14)। फिर हम इफिसियों के लिए उसकी प्रार्थना को देखते हैं।

पौलुस ने यह प्रार्थना नहीं की कि ये भाई यह करें या वह करें। बल्कि उसने उनकी समझ के लिए प्रार्थना की (1:17)।

ध्यान दें कि पौलुस ने केवल मसीही लोगों के मनों को बताने के लिए प्रार्थना नहीं की। उसने कहा, ''तुम्हारे मन की आंखें ज्योतिर्मय हों'' (1:18)। बाइबल में ''मन'' का अर्थ केवल दिमाग से कहीं अधिक है। इसका अर्थ भीतरी मनुष्य अर्थात मनुष्य के अंदर का स्थान है। हम विवेकपूर्ण ढंग से, संवेदनशील ढंग से उत्तर देने के ढंग से और समझ के ढंग से जो भी हैं उसमें वह सब इस वचन में है। पौलुस ने कुछ तथ्यों की बौद्धिक समझ से बढ़कर मांगा। वह हमारी आत्माओं को यीशु की महानता और उस स्थिति को, जो उसने हमारे लिए सुरक्षित की है, गहराई हमें समझाना चाहता था।

1:18-21 में पौलुस की प्रार्थना की तीन अवधारणाओं से यीशु के बारे में हमारी समझ बढ़ेगी। उन्हें समझना जीवन भर की कमाई है। जितना गहराई से हम इन सच्चाइयों को समझ लेंगे उतना ही हम अपने आपको परमेश्वर के सामने अपनी स्थिति के सम्बन्ध में आश्वस्त पाएंगे। जितना हमें अपनी स्थिति की समझ होगी, उतना ही गम्भीरता से हम मसीही लोगों के रूप में रहेंगे।

उम्मीद जो हमें है। पहली सच्चाई जो पौलुस मसीही लोगों को और अच्छी तरह से समझाना चाहता था वह वह उम्मीद है जो यीशु में हमें है: ''तुम्हारे मन की आंखें ज्योतिर्मय हों कि तुम जान लो कि उसके बुलाने से कैसी आशा होती है, और पवित्र लोगों में उस की मीरास की महिमा का धन कैसा है'' (1:18)।

''उसी बुलाहट की आशा'' के छोटे से वाक्यांश में पौलुस हमें अनन्तकाल से अनन्तकाल में ले गया। हमें बीते अनन्तकाल में से बुलाया गया था जब परमेश्वर ने मसीह में लोगों को उद्धार के लिए चुना। अनन्तकाल में हमारे बुलाए जाने के पूरा होने के लिए जो अभी होने वाला है आशा

का बड़ा काम है। यह आशा जो हमें है, किसी बच्चे के गिफ्ट की इच्छा करने जैसी नहीं है। नहीं, विश्वासियों के रूप में हमारी आशा एक ठोस उम्मीद अर्थात उस भविष्य का पक्का आश्वासन है, जो इस कारण है कि हम ने उसमें जो परमेश्वर में हमारे लिए किया है पूरा भरोसा किया है। पौलुस ने प्रार्थना की कि यह पक्की उम्मीद हमारे भीतरी जीवों को जलित रखे।

हमारे भरोसे का तथ्य उसमें नहीं है, जो हमने किया है। हमने इस पत्र का अभी एक शब्द भी नहीं पढ़ा है कि हमने क्या करना है। पौलुस ने केवल उसका गुणगान किया है जो हमें चुनने, हमें छुड़ाने और हमें क्षमा करने के लिए परमेश्वर ने किया है। परमेश्वर ने हमें हमारी प्रतिज्ञा की हुई मीरास देने का आश्वासन दिया है। पौलुस ने फिलिप्पियों को लिखा: ''... जिसने तुम में अच्छा काम आरम्भ किया है, वही उसे यीशु मसीह के दिन तक पूरा करेगा'' (फिलिप्पियों 1:6)। हमारी आशा विशेष रूप में उस पर है जो परमेश्वर ने अपने अद्‌भुत अनुग्रह के द्वारा हमारे लिए पूरा किया है।

यदि हमारा भरोसा अभी बना नहीं है तो पौलुस ने ''उसकी मीरास'' की महिमा का धन ''जो हमारा है'' उसकी बात करते हुए अपनी बात को विस्तार दिया। हम परमेश्वर के मास्टर प्लान में हैं। हम उसके पुत्र यीशु के साथ संगी वारिस हैं (रोमियों 8:17)। जो कुछ उसका है वह हमारा है!

पौलुस ने आगे कहा, ''मैं चाहता हूं कि तुम उसकी मीरास को जान लो। ... मैं चाहता हूं कि तुम उसी *तेजस्वी* मीरास को जान लो। ... मैं चाहता हूं कि तुम उसकी महिमा की मीरास के *धन* को जान लो।'' पौलुस अपने लोगों के लिए परमेश्वर की अति बहुतायत पर इतना ही ज़ोर दे सकता था। बार-बार उसने परमेश्वर के आत्मिक धन की महानता की बातें याद दिलाईं। इन वाक्यांशों पर ध्यान दें: ''... उसके उस अनुग्रह के धन'' (1:7); ''परमेश्वर जो दया का धनी है'' (2:4); ''मसीह के अगम्य धन'' (3:8); ''वह अपनी महिमा के धन के अनुसार तुम्हें यह दान दे कि तुम ... बलवंत होते जाओ'' (3:16)।

विश्वासी के लिए, जो अपनी स्थिति और अपने आत्मिक संसाधनों की समझ रखता है, डर का कोई स्थान नहीं हो सकता, न संदेह के लिए कोई स्थान है, न जीवन में चिंता के लिए कोई स्थान है। उसका भविष्य अंधेरे में नहीं है क्योंकि परमेश्वर उसी सब आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम है। विश्वासी व्यक्ति यह जानते हुए कि उसके लिए भविष्य में क्या है आज आत्मिक विजय में चल सकता है।

समाचार पत्र के दिवंगत प्रकाशक विलियम रैंडलॉफ हर्डस ने संसार भर के कला के भण्डारों को एकत्र करते हुए भाग्य में निवेश किया। एक दिन श्रीमान हर्डस को कला के एक कीमती नमूने की बात पता चली, जिसे उन्होंने पाने की बड़ी ललक हुई, उन्होंने इसे ढूंढ़ने के लिए अपना आदमी विदेश में भेज दिया। कई महीने की खोज के बाद उस आदमी ने खबर दी कि उसे वह खज़ाना मिल गया है। यह श्रीमान हर्डस के अपने ही गोदाम में था! हर्डस उस खजाने की खोज पागलों की तरह कर रहा था जो उसके पास पहले से ही था परन्तु वह उसका आनन्द नहीं ले पा रहा था।

हमें इस प्रकार से नहीं रहना चाहिए। हमें जीवन भर भीख मांगते हुए परमेश्वर से उन चीज़ों की मांग नहीं करनी चाहिए जो उसने हमें पहले से दे रखी हैं। हमें उसकी पूर्ण क्षमा पहले

से मिली हुई है। हमारे पास अनन्त जीवन है। हमारी पहुंच परमेश्वर के धन तक है। पौलुस ने प्रार्थना की कि हमारा हर दिन हर उस बात के लिए जो मसीह यीशु में हमें मिली है पूरी उम्मीद के साथ गुजरे।

वह ऊर्जा जो हमें मिली है। पौलुस ने कहा, ''तुम्हारे मन की आंखें ज्योतिर्मय हों कि तुम जान लो कि ... उसकी सामर्थ हम में जो विश्वास करते हैं, कितनी महान है'' (1:18, 19)।

यह परमेश्वर की वह सामर्थ नहीं है जो विश्व में बाहर कहीं काम कर रही है। नहीं पौलुस ने तो मसीही लोगों के लिए परमेश्वर की उस सामर्थ को पाने के लिए प्रार्थना की जो हमारे अन्दर काम करती है।

ध्यान दें कि परमेश्वर हमारे जीवनों में किस प्रकार की सामर्थ देना चाहता है: ''उस की शक्ति के प्रभाव के उस कार्य के अनुसार। जो उसने मसीह के विषय में किया, कि उस को मरे हुओं में से जिलाकर ...'' (1:19, 20)। पौलुस ने मसीही लोगों के रूप में हमें मिली सामर्थ का वर्णन करने के लिए सब सम्भावित शब्दों को इकट्ठा कर दिया। पहले उसने *dunamis* की बात की। जो ''डायनमो'' और ''डायनामाइट'' के लिए हमारे शब्द का आधार है। यह अब विश्वसनीय सामर्थ की बात है!

फिर पौलुस ने कहा कि यह सामर्थ परमेश्वर के ''कार्य'' करने के सम्बन्ध में है। और यह शब्द यूनानी शब्द *energeia* से लिया गया है जिससे हमें ऊर्जा के लिए अंग्रेज़ी शब्द ''energy'' मिलता है। हमें ईश्वरीय सामर्थ के साथ ऊर्जावान किया गया है, हमें अपने मसीही जीवनों में विजय के लिए आत्मिक रूप में अति ऊर्जावान किया गया है!

फिर पौलुस ने मसीही लोगों को बताया कि उन्हें केवल सामर्थ से नहीं, बल्कि *शक्तिशाली* सामर्थ के साथ ऊर्जावान किया गया था। हमें ऊर्जावान, सक्रिय, शक्तिशाली सामर्थ के साथ परमेश्वर द्वारा परिपूर्ण किया गया है।

इस सामर्थ के सही-सही स्वभाव के बारे में जो परमेश्वर की संतान के रूप में रहने में सहायता देने के लिए हमें मिली है, किसी भी प्रकार के संदेह को निकालने के लिए पौलुस ने हमारे लिए उदाहरण दिए। उसने कहा कि वह सामर्थ है जिसने यीशु को मुर्दों में से जिला दिया यानी यह वही सामर्थ है जिसने वहां पर जीवन दिया जहां मृत्यु थी, जिसने वहां पर सामर्थ दी जहां निर्बलता थी, जिसने वहां पर विजय दी जहां स्पष्ट पराजय थी, जिसने वहां पर आनन्द दिया जहां निराशा थी। परमेश्वर की सामर्थ जिसने परिस्थितियों पर काबू पाया और जीवनों को बदल दिया वह सामर्थ हमें मिली है! इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि पौलुस ने कहा:

> मैं ... उसके मृत्युजंय की सामर्थ को, ... जानू, ... (फिलिपियों 3:10)।
>
> जो मुझे सामर्थ देता है उस में मैं सब कुछ कर सकता हूं (फिलिप्पियों 4:13)।
>
> अब जो ऐसा सामर्थी है, कि हमारी विनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ के अनुसार जो हम में कार्य करता है, कलीसिया में, और मसीह यीशु में, उस की महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे। आमीन (इफिसियों 3:20, 21)।

वह ईश्वरीय ऊर्जा हमारे प्रतिदिन के चलने के लिए उपलब्ध है। पौलुस की प्रार्थना थी कि हम इसे समझकर इसका इस्तेमाल कर सकें।

उसको ऊंचा करना जिसकी हम सेवा करते हैं। हमारा उद्धार किसने किया है? हमारे लिए यह सब कौन करता है? यह बहुत ही आवश्यक है कि हम उसे समझें। हम उसके लिए तब तक नहीं जी सकते जब तक हम यह समझने न लगें कि अपनी सारी महिमा में वह कौन है:

> जो उसने मसीह के विषय में किया, कि उस को मरे हुओं में से जिलाकर स्वर्गीय स्थानों में अपनी दाहिनी ओर बिठाया। सब प्रकार की प्रधानता, और अधिकार, और सामर्थ और प्रभुता के, और हर एक नाम के ऊपर, जो न केवल इस लोक में, पर जाने वाले लोक में भी लिया जाएगा (इफिसियों 1:20, 21)।

इस संसार की कोई भी चीज़ यीशु से ऊपर नहीं है। कोई भी जो अब तक संसार में हुआ या आगे कभी होगा यीशु से ऊपर नहीं है। वह केवल सारी प्रधानता और अधिकार, सामर्थ और प्रभुता से ही ऊपर नहीं है। वह सबके ''कहीं अधिक'' ऊपर है। पौलुस ने घोषणा की:

> इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है। कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे हैं; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें। और परमेश्वर पिता की महिमा के लिए हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है (फिलिप्पियों 2:9-11)।

कोई सामर्थ, कोई अधिकार, कोई प्रधानता या प्रभुता ऐसी नहीं है जो यीशु के ''ऊपर'' हो। इफिसियों 1 में कम से कम चार बार पौलुस ने हमें बताया कि हम मसीह में हैं।

जब हम देखते हैं कि वह जिसकी हम सेवा करते हैं उसे कितना ऊंचा किया गया है और समझते हैं कि परमेश्वर ने हमें उसमें रखा है, तो हमें एक सुरक्षित आत्मिक तस्वीर मिलती है। हम उसके कारण कि जो परमेश्वर ने हमारे लिए किया है बड़े ही भरोसे के साथ उसके सामने अपने प्रतिदिन के जीवन में चलें।

सारांश। स्वर्ग के सभी संसाधन भी हमारे हैं। हम एक निर्बल सी मसीहियत से जो आत्मिक असुरक्षा में भरी, मसीह में अपनी स्थिति से अनजान है, कभी संतुष्ट न हों। इसके बजाय हम परमेश्वर के संतान के रूप में रहें जो उस महिमामय, धन्य मीरास का पूर्व स्वाद चखने लगे हैं जो एक दिन पूरी तरह से हमारी होगी।

क्रिस बुलर्ड

टिप्पणियां

[1]केन्नथ एस. वुएस्ट, *वुएस्ट'स वर्ड स्टडीज़ फ्रॉम द ग्रीक न्यू टैस्टामैंट फॉर द इंग्लिश रीडर: इफिसियंस एंड कोलोसियंस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1953), 51. [2]वही। [3]वही। [4]स्पायरस ज़ोडिएट्स, सम्पा., *द कम्पलीट वर्ड स्टडी न्यू टैस्टामेंट,* 2रा संस्क. (चटनूगा, टैनिसी: एएमजी पब्लिशर्स, 1992), 918. [5]*द एक्सपोज़िटर'स ग्रीक टैस्टामैंट,* संपा. डब्ल्यू. रॉबर्टसन निकोल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1967), 3:273 में एस. डी. एफ. सैलमण्ड, ''द एपिस्टल टू द इफिसियंस।'' [6]वुएस्ट, 52.

[7]एंड्रयू टी. लिंकोन, *इफिसियंस,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 42 (डलास: वर्ड बुक्स, 1990), 56. [8]वुएस्ट, 175. [9]एथलबर्ट डब्ल्यू. बुलिंगर, *ए क्रिटिकल लैक्सिकन एंड कन्कॉर्डेंस टू द इंग्लिश एंड ग्रीक न्यू टैस्टामैंट* (लंदन: सेमुएल बैगस्टर एंड सन्स, तिथि नहीं; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, रिजेंसी रेफरेंस लाइब्रेरी, 1975), 436. [10]ज़ोडिएट्स, 911.

[11]वुएस्ट, 54. [12]बुलिंगर, 498, 593, 900. [13]ज़ोडिएट्स, 912. [14]बुलिंगर, 422. [15]वुएस्ट, 56. [16]वही। [17]सैलमण्ड, 279–80. [18]ज़ोडिएट्स, 910. [19]सी. जी. विल्के एंड विलिबल्ड ग्रिम, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन आफ़ द न्यू टैस्टामैंट,* अनु. एवं संशो. जोसेफ हेनरी थेयर (एडिनबर्ग: टी. एंड टी. क्लार्क, 1901; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1977), 345; वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन आफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियंस लिटरेचर,* 3रा संस्क., संशो. व संपा. फ्रैडरिक विलियम डैंकर (शिकॉगो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 2000), 541–42 भी दखें। [20]बुलिंगर, 312.